वीर

यन्ती

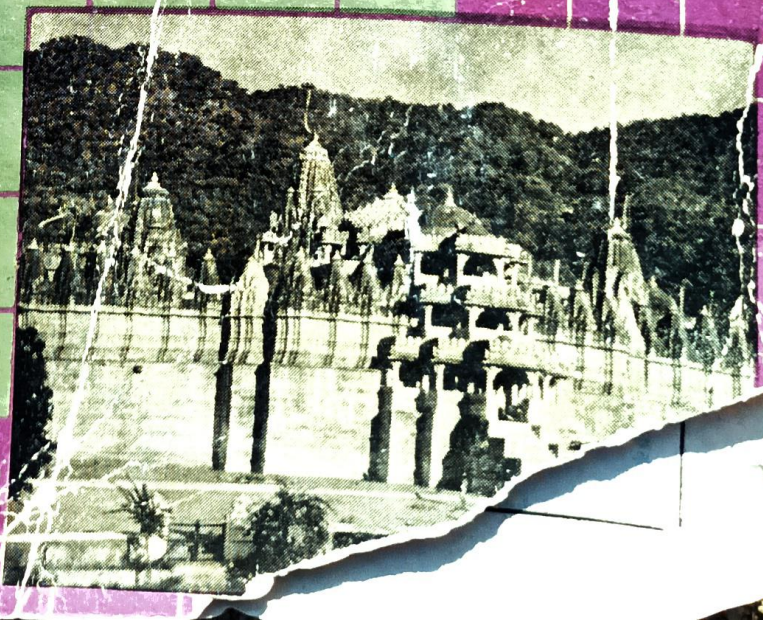

रिका

1 9 7 1

प्रकाशक:

ान जैन सभा, जयपुर

(भ) खजुराहों का पार्श्वनाथ मन्दिर, इनसाई-क्लोपीड़िया आफ वर्ल्ड आर्ट लन्दन ४७२ ।

(ख) खजुराहों में चक्रेश्वरी, पद्मावती, धर्नेन्द्र आदि यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियां । खजुराहों क्षेत्र द्वारा प्रकाशित कला पूर्ण रिपोर्ट ।

२—**महौबा:**—से प्राप्त २४ तीर्थंकरों का अजित नाथ, मूलनायक युक्त पट्ट

(क) सचित्र अहिंसा वाणी १९५९ । पृष्ठ ३६३

(ख) महौवा से कुआं खोदने से २४ तीर्थंकरों का पट्ट, दि० जैन डारेक्टरी बम्बई १९१४ पृ० २३५ ।

(ग) महौबै की पहाड़ियों में चन्देल-किलों के निकट नेमिनाथ की १९५६ इ० की और अजित नाथ की ११६७ ई० की मूर्त्तियां सर्वे रिपोर्ट भाग २१ पृष्ठ ७३ ।

(घ) महौबै के मन्दिर और मूर्त्तियां, जैन एन्टीकुअरी दिसम्बर १९६८ पृ० १७ ।

(ड) जैन धर्म और चन्देल राजे, जैन एन्टु-कुअरी भाग २५ पृ० १६ से २२

३—**चन्देरी**:—२४ तीर्थंकरों की उसी रंग की मूर्तियां जो रंग उनके शरीर का था ।

४—(क) **बूढ़ी चन्देरी**:—से सुपार्श्वनाथ व चन्द्र प्रभू आदि तीर्थंकरों की २१ मूर्तियां पुरातत्व विभाग की खुदाई पर प्राप्त, कनिंघम, सर्वे रिपोर्ट भाग २ पृ० २०४

(ख) बुढ़ी चन्देरी के प्राचीन जैन मन्दिर और मूर्तियां, अनेकान्त १।३१८ ।

(ग) बुढ़ी चन्देरी के निकट वेतवा नदी के किनारे की वीठला ग्राम से माणिक रत्न की पदूम प्रभु की ५ इंच ऊंची मूर्ति प्राप्त अहिंसा वाणी १९५९ पृ० ३६४ ।

(घ) बुढ़ी चन्देरी के ७५ जैन मन्दिर । ए पानी झरता रहता है जिसमें स्न करने से कोढ दूर हो जाता है । विदि का वैभव पृष्ठ २०९

५—**जसौ**:—प्राचीन जैन मूर्तियों का नगर जहां खोदो वहां जैन मूर्त्तियां खण्डहरों का वैभव ।

६—**सैरौन**:—ललितपुर से ६ मील, ६ जैन मन्दिर, १ हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन, शान्तनाथ की २० फुट उतंग मूर्ति दिल्ली जैन डाइरेक्टरी पृष्ठ १३५ ।

७—**खन्दार**—में चटान काट कर गुफा में तीर्थंकरों की मूर्तियां । देहली डायरेक्टरी पृष्ठ १३५ ।

८—**थूबोन**—चन्देरी से ९ मील २५ दि० जैन मन्दिर । एक में हनुमान जी की मूर्ति जो २ दिगम्बर जैन नग्न मुनियों को जिनको उनके पिछले जन्म के शत्रु ने प्रचण्ड अग्नि में फेंक दिया था, अपनी विद्या बल से दहकती हुई अग्नि से निकाल कर आकाश में ले जाते हुये दिखाया गया है ।

९—(क) **नवागढ़** संग्रहालय की जहां सर्प फण युक्त पार्श्वनाथ की कुण्डली आसन पर कलापूर्ण मूर्ति, अनेकान्त फरवरी १९६३, पृ० १७७

(ख) नवागढ़ संग्रहालय नीरज जैन, अनेकान्त १५।३३७ ।

(ग) नवागढ एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थ अनेकान्त फरवरी १९५६ पृ० २७७ ।

१०—(क) **द्रोण गिरि** डा० विद्याधर जोहरापुरकर, अनेकान्त, १७।१२३

(ख) द्रौणगिरि सिद्ध क्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट ।

११—**नरसर** से प्राप्त अभिनन्दन, सुमतनाथ, पुष्पदन्त श्रीयांश, विमल नाथ, अनन्तनाथ, पदूमप्रभु, धर्मनाथ की भूगर्भ से प्राप्त मूर्तियां जो

आज भी शिवपुरी पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है ।

१२-**नरवर** चन्देलवंशी नरेश के महा योद्धा सेनापति उदल की ससुराल थी । जहां से एक शिला लेख मिला है जो ग्वालियर संग्रहालय में हैं जिसमें कथन है कि यहां अनेक विशाल जैन मन्दिर थे । अनेकान्त १९७० पृष्ट ११० ।

१३-**नलपुर** से प्राप्त ऐतिहासिक शिलालेख जिसमें पार्श्वनाथ आदि तीर्थकरों की वन्दना की गई । अनेकान्त १९७० पृ० ११० । व १७४ से १८१ ।

१४-**उदयगिरि** विदिशा में एक बूढ़ी पिसनहारी का कलापूर्ण दक्षिणी जैन मन्दिर जिसको उसने पिसाई की आमदनी से बनवाया, मध्य प्रदेश सन्देश पुरातत्व अंक १३ जून सन् ७० पृ० ४५ ।

१५-**विदिशा और ग्वालियर** का पुरातत्व, विदिशा का वैभव ।

१६-(क) **मुक्ता गिरि** के ५२ जैन मन्दिर जिन में कई चट्टान काट कर कलापूर्ण दर्शनीय है । मन्दिर मध्य प्रदेश संदेश १३ जून सन् ७० पृ० ६२

१७-**पपौरा** दिल्ली जैन डायरेक्टरी पृ० १३५ ।

१८-(क) **अहार**, जैन मूर्तियों का खजाना । अनेकान्त १९।६२ ।

(ख) जैन अतिशय क्षेत्र अहार, नीरज जैन, अनेकान्त १८।११७

(ग) शान्तिनाथ संग्रहालय अहार नीरज अनेकान्त १८।२२२ ।

(घ) अहार के प्राचीन मूर्ति लेख अनेकान्त, ९।३८३, १०।२४, ६९ ९७, १५३ ।

(ङ) चन्देल राज में अहार में जैन वैभव । जैन एन्टीकुअरी दिसम्बर १९६८ पृ० २१ ।

(ढ) अहार पुरातत्व संग्रहालय की अजित नाथ अभिनन्दन नाथ पुष्पदन्त धर्म नाथ अनन्त नाथ आदि तीर्थकर की अनेक मूर्तियां अहिंसा वाणी १९५९ पृ० ४२२ ।

(च) अहार का प्राचीन नाम मदनपुरी था । जैन मुनि को अनेक नगरों में विहार करने और उसके कई मास के उपवास के बाद यहां अहार हुआ, तब से इस नगर का नाम अहार हुआ । पाणाशाह व्यौपारी का रांग इस अतिशय भूमि पर चान्दी हो गया । ऐतिक विस्तार के लिये, अहार गजरथ की रिपोर्ट ३१-१०-१९५९ ई० पृ० १३-१४ ।

१९-**अजयगढ़** की पहाड़ी की चोटी पर चन्देल राजाओं के किले के जैन मन्दिर में सुमति नाथ की मूर्ति, जैन एन्टीकुअरी दिसम्बर १९६८ पृष्ट १९ ।

२०-**बन्धा** के भूगृह में मल्लिनाथ की ११४२ ई० की प्रतिष्ठित तथा अनेक तीर्थंकरों की मूर्तियाँ । बन्धा क्षेत्र का प्रकाशित बन्धा वैभव

२१-**बानपुर** में ९४५ ई० का कलापूर्ण चौमुखा सहस्र कूट जिनालय, अनेकान्त १९६३ पृ० ५१

२२-**सौनागिरि** चकी के आसार का कलापूर्ण मंदिर बजनी शिला, नारियल कुण्ड, मध्य प्रदेश का संदेश १३ जून सन् ७० पृ० ३०-३१ शीतल नाथ की चमत्कारी मूर्ति दिल्ली जैन डारेक्टरी पृ० २३५

चन्द्रप्रभु विशाल मन्दिर में चन्द्र प्रभु की ऐसी शान्तिदायक मूर्ति कि २४-१०-६२ को

नवागढ़, एक महत्त्वपूर्ण मध्ययुगीन जैन तीर्थ

श्री नीरज जैन, सतना

प. गुलाब चन्द जी पुष्प द्वारा 8 अप्रैल 1959 में अन्वेषित नवागढ़ पुरासम्पदा का भण्डार है । 1961 में जाकर आपने इसका गहन अध्ययन करके बताया यह मध्य कालीन समृद्ध विशाल तीर्थ क्षेत्र रहा है । जहाँ कई जिनालय निर्मित थे । साधुओं ने भी उस काल में यहाँ श्री विहार करके साधनादि गुफाओं में विश्राम एवं संयम साधना करके आत्म कल्याण पथ प्रशस्त किया है । यहाँ पुरा सम्पदा के अन्वेषण के महत्त्वपूर्ण स्थल हैं ।

❖❖❖❖

"विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र"

डॉ. मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी

एमिरेट्स प्रो. काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, वाराणसी

मैंने कई तीर्थों का अन्वेषण किया । 40 वर्ष की कार्यपद्धति में नवागढ़ जैसा तीर्थ क्षेत्र पहली बार देखा है, जहाँ शैलाश्रय, शैलचित्र, उत्कीर्ण साधु आकृति, बावड़ी, टोरिया, साधना स्थल, कलाकृतियाँ, मानस्तंभ, पाषाण मूर्ति, ताम्र मूर्ति, धातु मूर्ति संगृहीत हैं ।

यहाँ पूर्वकाल में विशाल जैन मंदिरों का समूह तथा अन्य धर्मों के मंदिर एक साथ निर्मित थे, जो धर्म सद्भाव का साक्षात् उदाहरण हैं ।

यहाँ की सम्पदा को व्यवस्थित करने के लिए संग्रहालय का निर्माण अनिवार्य है ।

❖❖❖❖

पुरातत्त्व का भण्डार है नवागढ़

डॉ. ए पी.गौड़ – लखनऊ

सन् 2013 से 15 तक आपका प्रवास नवागढ़ अतिशय क्षेत्र में कई बार हुआ । आपने वहाँ संगृहीत पुरासम्पदा का राजकीय संग्रहालय झांसी में रजिस्ट्रेशन करने में महनीय योगदान दिया है ।

डॉ. गौड़ ने अपने आलेख मे नवागढ़ के विस्तार एवं प्राकृतिक परिवेश का सूक्ष्मता से अध्ययन करके लिखा, यहाँ पुरातत्त्व सम्बन्धी विशेष सामग्री उपलब्ध है यहाँ का अन्वेषण आवश्यक है । जिससे कई रहस्य उद्घाटित होंगे ।

डॉ. गौड़ के निर्देशन में पुरा सम्पदा का संचय एवं उनको व्यवस्थित करने का कार्य द्रुतगति से सम्पन्न हुआ था ।

❖❖❖❖

नवागढ़ के बीहण में शैलाश्रय और प्रागैतिहासिक शैलचित्र

डॉ. स्नेहरानी जैन

सर हरिसिंह गौड़ विश्व विद्यालय सागर

डॉ. स्नेहरानी जी ने सन् 2015 से 2017 तक नवागढ़ के बीहड़ में गंभीर निरीक्षण एवं सर्वेक्षण करके यहाँ के शैलाश्रयों को लाखों वर्ष प्राचीन बताया है।

आपने जैन पहाड़ी पर कच्छप शिला में अंकित शैलचित्रों का कई दिनों तक विशेष अध्ययन करके जैन धर्म के विशेष रहस्यों का उद्घाटन किया है ।

आपने अपने आलेख में जैन सिद्धान्त के विशेष आयाम तथा पंचमहाव्रत, कषाय निग्रह, रत्नत्रयपरिपालना, सल्लेखना, सल्लेखना स्थल, निषीथिका, केवलज्ञान–सूर्य, सिद्धत्व, सप्त तत्त्वों का निरूपण करके इसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण बताया है ।

आपके अनुसार यहाँ और शैलाश्रय एवं शैलचित्र होना चाहिये। यहाँ की लघु पहाड़ियों में अन्वेषण करके और साक्ष्यों में उद्घाटित करने पर जोर दिया है । जिसके अनुसार इस क्षेत्र को प्रागैतिहासिक (2 से 5 लाख वर्ष प्राचीन औजारों की श्रृखंला है) क्षेत्र सिद्ध किया गया है ।

❖❖❖❖

''विलक्षण है नवागढ़ तीर्थ''

डॉ. व्ही.बी. खरबड़े – निर्देशक

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान शाला, लखनऊ

डॉ. खरबड़े के निर्देशन में नवागढ़ में संगृहीत कलाकृतियों एवं प्रतिमाओं का रासायनिक संरक्षण कार्य क्रमशः 2017 एवं 2018 में सम्पन्न किया गया ।

यह कार्य श्री पी. के. पाण्डेय एवं श्री एम. पी. मौर्य के माध्यम से अनुसंधान शाला के प्रशिक्षणरत् विद्यार्थियों के द्वारा सम्पन्न हुआ । जिसमें 100 से अधिक मूर्तियों एवं कला शिल्पों की रासायनिक पद्धति से सफाई एवं उपचार का कार्य किया गया ।

वर्ष 2021 में डॉ. मैनेजर सिंह के निर्देशन मे श्री पी. के. पाण्डेय के माध्यम से धातु, लकड़ी एवं मिट्टी के उपकरणों तथा पुरासंपदा का संरक्षण सम्पन्न हुआ ।

डॉ. खरबड़े ने अपने आलेख में नवागढ़ की विभिन्न पुरासम्पदा यथा उत्कीर्ण पाषाण कृति, शैलाश्रय, शैलचित्र, मिट्टी पाषाण के मनके, प्राचीन मूर्तियाँ एवं बावड़ी को देखकर इसे विलक्षण तीर्थ कहा है ।

❖❖❖❖

नवागढ़ पाषाण युग का एक सांस्कृतिक क्षेत्र

डॉ. गिरिराज कुमार
राष्ट्रीय सचिव, रॉक आर्ट सोसायटी ऑफ इंडिया
दयालबाग, आगरा

डॉ. गिरिराज कुमार ने वर्ष 2017 से 2018 तक चार बार यहाँ की पहाड़ियों में भ्रमण किया है । आपने 10 कि.मी. के क्षेत्र का गहन अध्ययन करके यहाँ विशेष पाषाण औजारों की श्रृंखला का अन्वेषण करके इसे प्रागैतिहासिक क्षेत्र सिद्ध किया है ।

प्रथम अन्वेषण में पैट्रोलिक कप मार्क एवं पोस्ट पेलियोलिथिक चर्ट के पाषाण औजार खोजे । द्वितीय अन्वेषण में मैनवार टोरिया, सापौन टोरिया एवं मुंडी टोरिया में कई दिनों तक अन्वेषण करके प्रिपेलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष प्राचीन) मिडिल पेलियोलिथिक (35 हजार से 2 लाख वर्ष प्राचीन) पाषाण औजारों की श्रृंखला के साथ अन्य कई पाषाण औजारों का अन्वेषण करने का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया है ।

आपका इस क्षेत्र के प्रति विशेष लगाव है, आप अभी और अन्वेषण करके कई रहस्यों को उद्घाटित करेंगे ।

❖❖❖❖

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नावई, नवागढ़ नन्दपुर

डॉ. के. पी. त्रिपाठी
वरिष्ठ इतिहासविद्, टीकमगढ़

डॉ. त्रिपाठी ने बुन्देलखण्ड की प्राकृतिक पृष्ठभूमि, पुरासम्पदा, किला, इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत पर कई पुस्तकों का लेखन करके अनेक पुरस्कारों एवं अलंकरणों को प्राप्त किया है ।

आपने चन्देल कालीन प्राकृतिक परिवेश के आलोक में नवागढ, नन्दपुर एवं नावई (राजस्व नाम) के विकास एवं पराभव का अन्वेषण उपलब्ध साहित्य के परिपेक्ष्य में किया है ।

तत्कालीन प्राकृतिक अवरोध, पठारी क्षेत्र की विषमता को देखते हुए चन्देल शासकों द्वारा जल संसाधन हेतु क्या–क्या प्रयास किए हैं, उल्लेख करके नवागढ़ में होने वाले परिवर्तनों को रेखांकित किया है ।

❖❖❖❖

सन्तों की पुरातन साधना स्थली

प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

पूर्व सचिव, संस्कृति मंत्रालय म.प्र. शासन, भोपाल

देवगढ़ कला क्षेत्र पर शोध प्रबन्ध द्वारा डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करके तत्कालीन पुरातात्त्विक व्यवस्था को उद्घाटित किया है ।

आपने नवागढ़ क्षेत्र की प्राचीनता के संदर्भ में शैलाश्रयों, शैलचित्रों, साधना स्थलों का गहन अन्वेषण करके नवागढ़ में सन्तों के विहारकाल, संयम साधना सल्लेखना एवं समाधि के बारे में महत्त्वपूर्ण अन्वेषण किया है ।

गुप्तकाल के पूर्व से ही नवागढ़ में सन्तों का श्रीविहार होने तथा तत्कालीन श्रावकों द्वारा उनकी सेवा, आहार व्यवस्था, तपःसाधना में अत्यंत सहयोगी कार्य का उल्लेख किया है ।

डॉ. भागेन्दु जी ने नवागढ़ से प्राचीन संस्कृति के साथ संत साधना के मानक पर इस क्षेत्र को आध्यत्मिक ऊर्जा का अक्षय भण्डार बताया है ।

❖❖❖❖

प्राचीन जैन नन्दपुर शिलालेखों के दर्पण में

श्री हरिविष्णु अवस्थी–वरिष्ठ इतिहासकार, टीकमगढ़

बुन्देली परम्परा लोककला, लोकगीत, लोकरीतियों पर अपने विशद् रूप से साहित्य सृजन किया है । जिसमें बुन्देली कहावतें, लोकोक्तियाँ, अहानों को रेखांकित करके विलुप्त परम्पराओं को जीवन्त करने का पुरुषार्थ किया है ।

आपने बुन्देली पुरातत्त्व, इतिहास एवं संस्कृति के साथ प्राचीन अभिलेखों पर विशेष कार्य किया है । प्राकृत, संस्कृत, देवनागरी, अरबी एवं उर्दू में अंकित अभिलेखों के परिपेक्ष्य में नवागढ़ क्षेत्र में प्राप्त अभिलेखों का समीक्षात्मक अध्ययन करके इसकी प्राचीन कला, धर्म, संस्कृति एवं सद्भाव जैसे आयामों को उद्घाटित किया है ।

आपने खजुराहो, महोबा, मदनपुर, अहार, पपौरा के अभिलेखों के साथ नवागढ़ के अभिलेखों से नवागढ़ की प्राचीनता, राजनैतिक, कला, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक आयामों को प्रकाश में लाने का सम्यक् पुरुषार्थ किया है ।

❖❖❖❖

नवागढ़ की पुरासम्पदा और मांगलिक प्रतीक

जयकुमार जैन निशांत

निर्देशक, प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़

नवागढ़ तीर्थ के अन्वेषक पं. गुलाब चन्द जी पुष्प के चतुर्थ पुत्र श्री जयकुमार जी ने जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहणकर संयम मार्ग प्रशस्त किया । आपने म.प्र. विद्युत मण्डल से स्वेच्छा निवृत्ति लेकर नवागढ़ क्षेत्र के पुरातात्त्विक अनुवेषण का कार्य 2013 से आरंभ करके यहाँ देश के ख्यातिप्राप्त इतिहासविद्, पुरातत्त्वविद्, अभिलेखवाचक, मूर्तिविज्ञानी विशेषज्ञों को आमंत्रित करके विलक्षण अन्वेषण कराया है ।

आपने सरपंच श्री रामनारायण यादव के साथ नवागढ़ के बीहड़ में महीनों भ्रमण करके कई शैलाश्रय, शैलचित्र एवं पुरासम्पदा की खोज करके जैनधर्म, जैन संस्कृति एवं इतिहास के विलक्षण आयाम स्थापित किए हैं ।

वर्तमान में आप अपना सर्वस्व नवागढ़ क्षेत्र को समर्पित करके यहाँ श्रीनवागढ़ गुरुकुलम् का सफल निर्देशन कर रहे हैं । जिसमें बच्चों को धार्मिक संस्कारों के साथ आधुनिक शिक्षा दी जा रही है ।

❖❖❖❖

विलक्षण साइट है नवागढ़

डॉ. बृजेश कुमार रावत

लखनऊ

डॉ. रावत के आलेखानुसार नवागढ़ पुरातत्त्व की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध साइट है । यहाँ जो भी अभी अन्वेषित किया गया है उससे अधिक पुरा सम्पदा भूगर्भ में संरक्षित है । जैसा नवागढ़ क्षेत्र के निर्देशक ब्र. जयकुमार निशांत ने बताया है, यहाँ और भी टीले एवं भग्नावशेष अन्वेषण की प्रतीक्षा में हैं ।

यहाँ की बावड़ी उसके आसपास, बगाजटोरिया, सापौन टोरिया, मैनवार टोरिया एवं जैन पहाड़ी में असीमित संभावनाएँ हैं ।

यहाँ पुरा विशेषज्ञों के विशेष दल द्वारा अन्वेषण एवं खुदाई का कार्य होना चाहिए ।

मैंने कई क्षेत्रों का निरीक्षण किया परन्तु नवागढ़ की साइट विलक्षण है । यहाँ शासन–प्रशासन का ध्यान आवश्यक है ।

❖❖❖❖

चन्देल शासन काल में जैन धर्म का विकास

डॉ. श्रीमती अर्पिता रंजन

सहायक पुरालेखविद्

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण – नोयडा (उ.प्र.)

श्रीमती अर्पिता रंजन ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण में कार्य करते हुए नवागढ़ प्राचीन नंदपुर में प्राप्त अभिलेख परम्परा पर शोधकार्य करके डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है । आपने नवागढ़ की प्रतिमाओं की पादपीठ पर, कलाकृतियों पर, स्तंभों पर, चट्टानों पर अंकित अभिलेखों के आधार पर वहाँ के सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, पुरातात्त्विक आयामों की तत्कालीन परम्पराओं को उजागर किया है ।

नवागढ़ के मूल नायक अरनाथ भगवान के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा है । आप इस क्षेत्र पर विशेष अन्वेषण कार्य करने की मनोभावना रखती हैं । नवागढ़ से प्राप्त संस्कृत अभिलेख एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों का समीक्षात्मक अध्ययन शोध प्रबन्ध के माध्यम से तत्कालीन श्रावकों एवं उनके द्वारा बनाये गये भवनों , मंदिरों एवं जिनालयों का स्पष्ट एवं समीक्षात्मक विवेचन किया है ।

❖❖❖❖

- Newly Discovered Rock Art site Navagarh in District Lalitpur
  Dr. Giriraj Kumar
  Br. Jai Kumar Nishant
  Dr. Abhimanyu Gupta

- नवागढ़ मूर्तियों का कला वैशिष्ट्य
  डॉ. श्रीमती अर्पिता रंजन

- गुरुकुल परम्परा का संवाहक नवागढ़
  डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
  अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिग. जैन शास्त्रि–परिषद्

- Navagarh Antiquities from the chandelas
  Period - Dr. Yashwant K. Malaiya
  Colorado State Univercity